ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 06, 2022

जगदीशचंद्र के उपन्यासों में आर्थिक चेतना

मिस डॉक्टर स्वाती सुधाकर थुबे

शोधार्थी, एसएमबीएसटी, कला, विज्ञान और वाणिज्य कॉलेज, संगमनेर

सारांश

हिंदी उपन्यास साहित्य का विकास गतिशील रहा है,जिसमें जगदीश चंद्र नाम काफी प्रसिध्द है। उनके उपन्यास जीवन के विभिन्न पहलुओं को दर्शाते हैं,लेकिन उनकी प्रसिद्धि के बावजूद, उन्हें वह पहचान नहीं मिली जिसके वे हकदार हैं। उनके उपन्यास आर्थिक चेतना का समावेश करते हैं,आर्थिक चेतना का स्वरूप परिवर्तन और आम लोगों को काफी प्रभावित करते हैं। यह नयी शिल्पगत मानवीय मूल्यों के साथ जगदीश चंद्र ने तैयार किया है, जो अपने उपन्यासों में भाषा में हो रहे संरचनात्मक परिवर्तनों की चर्चा और विश्लेषण करते हैं। अपनी शैली से वे मानवीय जीवन शैली के चेतना अभिव्यक्ति की जटिल यथार्थवादी एवं विशिष्ट परिवेश को काफी सरलता से समावेशित करने का प्रयास करते है।

मुख्यबिन्दु- जगदीशचंद्र व्यक्तित्व,उपन्यास,कथा साहित्य,आर्थिक चेतना

प्रस्तावना

स्वतंत्रता के पश्चात् जगदीशचन्द्र ने हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में एक लेखक के रूप में अपनी प्रतिष्ठा स्थापित किया है। अपने समाजवादी और यथार्थवादी साहित्यिक कार्यों के लिए प्रसिद्ध जगदीशचंद्र को प्रेमचंद्र के मार्ग पर चलने वाला लेखक माना जाता है। हालाँकि,उनकी रचनाओं में आधुनिक चेतना के स्पष्ट संकेत मिलते हैं। उन्होंने अपने विश्वगत दृष्टिकोण के अनुरूप मानवीय भावनाओं को शामिल करते हुए वास्तविकता का प्रगतिशील और तथ्यात्मक आधारित चित्रण प्रस्तुत करते हुए,आधुनिक साहित्य के प्रतिनिधि के रूप में

IJFANS International Journal of Food And Nutritional Sciences Official Publication of International Association of Food and Nutrition Scientists

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 06, 2022

अपने काम को प्रभावी ढंग से प्रसारित किया है। लेखकजगदीशचंद्र के पास कौशल और क्षमताओं का असीमित प्रतिभा है। उन्हें प्रगतिशील नवप्रवर्तकों के बीच एक दुर्जेय नवप्रवर्तक के रूप में माना जाता है। जगदीशचन्द्र का व्यक्तित्व बहुआयामी था। व्यक्तित्व विश्लेषण किसी व्यक्ति की शारीरिक संरचना,मूल सिद्धांतों,विश्वासों,दृष्टिकोण और पारिवारिक पृष्ठभूमि का अवलोकन है। लेखक जगदीशचंद्र का जन्म 23 नवंबर 1930 को पंजाब प्रांत में स्थित एक छोटे से गांव में हुआ था। उनके अस्तित्व की विशेषता बहुत ही सरल और सीधा स्वभाव था। लेखक के बचपन के दौरान,वे दलित बस्ती से आकर्षित हुए थे। अपने परिवार के सीमित अधिकार स्वरुप उनके सामाजिक विषमताओं के अनुरुप,जगदीशचंद्र को दलित समुदाय के साथ जुड़ने से मना किया गया था। फिर भी,उनके लिए दलितों का साथ और उनके बीच शामिल होना ही काफी था।[1]उनके परिवार की उच्च वर्ग में सदस्यता के परिणामस्वरूप,उन्हें बहुत ही सीमित परिस्थितियों में रहने के लिए मजबूर होना पड़ा। उन्होंने अपनी प्रारंभिक स्कूली शिक्षा अपनी माँ के निवास पर पूरी की। इसके बाद,उन्होंने अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर की डिग्री हासिल किया। उन्होंने अपने जीवन के दौरान कई क्षेत्रों में अपने योगदान का प्रदर्शन किया। उन्होंने अपने रोजगार को केवल जीविका के साधन के रूप में देखा, इसलिए अपना अधिकांश समय लेखन को समर्पित किया है। लेखक जगदीशचंद्र को साहित्य के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करने के लिए सोम आनंद सम्मान के पात्र हैं। स्थानीय परिवेश प्रत्येक लेखक के लिए प्रेरणा का प्राथमिक स्रोत होता है। यद्यपि उनके पास विविध प्रकार की योग्यताएँ थीं,फिर भी उनमें अहंकार का कोई अंश नहीं था। लेखन के अलावा,उन्हें संगीत सुनने जैसे अन्य शौक भी थे। लेखक जगदीशचन्द्र के सम्पूर्ण कृतित्व में सूक्ष्म एवं भावात्मक गुण विद्यमान हैं।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 06, 2022

उपन्यास साहित्य

लेखक जगदीशचंद्र जी ने अन्य साहित्यिक विधाओं में अपने योगदान को पीछे छोड़ते हुए अधिकतर उपन्यास लेखन पर ध्यान केंद्रित किया है। अब तक उनकी कुल ग्यारह रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं। वह पुस्तक शैली के प्रति अपने आकर्षण के औचित्य को व्यक्तिगत रूप से स्पष्ट करते हैं। लघु कहानी के दायरे में अपने पात्रों को पूरी तरह से विकसित करने में असमर्थता के कारण उन्होंने लघु कहानियाँ लिखने से उपन्यास लिखने की ओर कदम बढ़ाया। वास्तव में,यह कहना सही है कि उपन्यासों की शैली के भीतर,पात्रों को छोटी कहानियों की तुलना में अधिक जटिलता के साथ तैयार किया गया है। लेखक जगदीशचंद्र ने यादों के पहाड़,धरती धन न अपना,आधा पुल,कभी न छोड़े खेत,मट्ठी भर कंकर,टुंडा लाट,घास गोदाम,लाट की वापसी और जमीन अपनी तो थी,जैसी कई किताबें लिखी हैं। लेखक जगदीशचंद्र जी ने अपनी साहित्यिक कृतियों में सबसे निचले सामाजिक-आर्थिक तबके की वास्तविकता पर विशेष बल दिया है। उन्होंने लेखन के संबंध में शिवकुमार मिश्र के विचारों से अवगत कराया है। जगदीशचंद्र उन लेखकों में से एक हैं जिन्होंने अपनी व्यक्तिगत रचनात्मक चिंताओं पर विचार करते हुए न केवल परंपरा की चुनौती को स्वीकार किया बल्कि अपनी रचनात्मकता के माध्यम से इसे पुनर्जीवित भी किया।[2]अपने युग के प्रचलित मुद्दों को संबोधित करके,उन्होंने न केवल अपने समकालीनों के लिए अपने काम को महत्व दिया,बल्कि कलाकारों की भावी पीढ़ियों के लिए भी इसकी पहुंच सुनिश्चित किया है। जगदीशचंद्र जी का कार्य वर्तमान स्थिति और आर्थिक जागरूकता का अतिसूक्ष्म चित्रण प्रस्तुत करता है।

उपन्यास और सामाजिकता

सामाजिक व्यवस्था और साहित्य एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। वे एक-दूसरे पर परस्पर प्रभाव डालते हैं। कला और साहित्य गतिशील समाज के दर्पण के रूप में कार्य करते हैं,इसके सतत

IJFANS International Journal of Food And Nutritional Sciences Official Publication of International Association of Food and Nutrition Scientists

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 06, 2022

परिवर्तन को दर्शाते हैं। यह सामाजिक एवं आर्थिक जागरूकता का परिचायक है। सामज के विकास की प्रक्रिया का साहित्य और कला की सभी विधाओं पर गहरा प्रभाव पड़ता है। साहित्य का कर्तव्य समाज में लाभकारी परिवर्तन लाना है। लेखक सामाजिक धारणाओं,रीति-रिवाजों और आदर्शों से प्रभावित होता है और अपने कार्यों के माध्यम से समाज को नया आकार देने में भी योगदान देता है।[3]सभी साहित्यिक विधाओं का संबंध समाज से है,लेकिन उपन्यास,विशेष रूप सेमानव अस्तित्व के साथ अधिक निकटता से जुड़ा हुआ है। एक उपन्यास पाठक की संज्ञानात्मक क्षमताओं पर गहरा प्रभाव डालने की क्षमता रखती है। उपन्यास जीवन के बारे में ज्ञान का एक अद्वितीय स्रोत है,क्योंकि यह वास्तविकता के गहन दर्पण के रूप में कार्य करती है। उपन्यासकार किसी भी सामाजिक परिवर्तन से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते है।[4]सामान्य लोगों द्वारा सहन की जाने वाली कठिनाइयों को देखकर,एक प्रामाणिक लेखक की आत्मा अस्थिर हो जाती है,और गहन पीड़ा के ये उदाहरण उनके काम की गहराई को बढ़ाते हैं। यह पुस्तक अपने गहन,व्यापक और स्थायी प्रभाव के मामले में अन्य सभी साहित्यिक विधाओं से आगे निकल जाती है। उपन्यासकार अपनी साहित्यिक रचनाओं में वास्तविकता को व्यक्त करते हैं,फिर भी प्रत्येक उपन्यासकार की वास्तविकता को समझने की धारणा अलग-अलग होती है। प्रत्येक लेखक अपने अनुभव के आधार पर मानव अस्तित्व की वास्तविकता का चित्रण करता है। जीवन की वास्तविकता की विभिन्न अभिव्यक्तियाँ हमें दिखाई जाती हैं। लेखक का उद्देश्य केवल यथार्थवादी चित्रण के माध्यम से समाज की सूक्ष्म वास्तविकताओं को प्रस्तुत करना नहीं होना चाहिए। काम में यथार्थवाद को शामिल करते हुए वैचारिक और कलात्मक तत्वों के बीच संतुलन बनाना महत्वपूर्ण है। पुस्तक और समाज के बीच एक निर्विवाद संबंध है। चाहे वह संवेदनशीलता हो या संवेदनशीलता की कमी और मानवीय आदर्शों के प्रगतिशील प्रभाव से उत्पन्न असामाजिक व्यवहार,उपन्यास का मानवता और समाज से संबंध अटूट रहता है।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 06, 2022

मनुष्य अस्तित्व के लिए निरंतर संघर्ष में लगा हुआ हैऔर यह उपन्यास अस्तित्व के लिए मानव संघर्ष की कठिन यात्रा को दर्शाने वाली एक कहानी के रूप में कार्य करती है।

जगदीशचंद्र के उपन्यासो में चेतना

लेखक जगदीशचंद्र द्वारा लिखित कुछ उपन्यास जिनके माध्यम से सामाजिक व मानवीय यथार्थवादी समाज की मनोदशा को अपने लेखन द्वारा आर्थिक चेतना के रुप में दर्शाने का प्रयास करते है-

धरती धन न अपना,प्रस्तुत उपन्यास जगदीशचंद्र द्वारा लिखित सबसे प्रशंसित साहित्यिक कृति माना जाता है। कहानी की शुरुआत नायक काली से होती है,जो शहर की अपनी यात्रा के बाद गांव में वापस जा रहा है। एक युवा दलित व्यक्ति को अपने पिता की स्थायी और अच्छी तरह से निर्मित घर प्राप्त करने की आकांक्षा को साकार करने के लिए अपने समुदाय और उच्च वर्ग दोनों के तिरस्कार का सामना करना पड़ता है।[5]सामाजिक अन्याय के बारे में जागरूकता बढ़ाने का काली का प्रयास निरर्थक साबित होता है। इस कार्य का प्राथमिक उद्देश्य दलित जागरूकता को प्रोत्साहित करने का लेखक का प्रयास है। जगदीशचन्द्र ने अपनी रचनाओं में दलितों की सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों का चित्रण किया है। आधा पुल प्रस्तुत उपन्यास में,पांच सैनिकों और एक जूनियर कमीशंड अधिकारी (जेसीओ) का एक समूह,जो कैप्टन इलावत के साथी हैं,पूरे संघर्ष में अपने जीवन का बलिदान देते हैं। अपने साथी सैनिकों की मृत्यु के बाद,कैप्टन इलावत ने उस पुल को उड़ा दिया,जिस पर पाकिस्तानी सैनिकों ने कब्जा कर लिया था। इस संघर्ष के दौरान कैप्टन इलावत की मृत्यु हो गई। हालाँकि,कैप्टन इलावत के सेमी के प्रति स्नेह के बावजूद, इलावत की मृत्यु के परिणामस्वरूप उनकी प्रेम कहानी अंधेरे में डूबी हुई है। यह कहानी वास्तविक जीवन में भारतीय सैनिकों और कमांडरों के प्रामाणिक अनुभवों को दर्शाती है। मुट्ठी भर कांकर नामक

IJFANS International Journal of Food And Nutritional Sciences Official Publication of International Association of Food and Nutrition Scientists

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 06, 2022

उपन्यास में देश के विभाजन के बाद कृषि भूमि अधिग्रहण,किसानों को विस्थापित करने और दिल्ली में शरणार्थियों की आमद को समायोजित करने के लिए तेजी से शहरीकरण प्रक्रिया की कहानी को दर्शाया गया है। देश के विभाजन के बाद पंजाबी शरणार्थियों को दिल्ली के आसपास बसाया गया है। नतीजतन,जाट किसानों को उनकी ही जमीन से जबरन हटाया जा रहा है। महत्वपूर्ण तबाही सहने के बावजूद,इन शरणार्थियों ने उल्लेखनीय दृढ़ संकल्प,मेहनती,अनुकूलनशीलता और दुस्साहस दिखायाऔर उन किसानों को पीछे छोड़ दिया जो अधिक आराम से रहते थे। पंजाबी प्रवासियों की आमद ने एक जीवंत जीवन शैली,नवीन आजीविका रणनीतियों,नैतिक सिद्धांतों और सांस्कृतिक प्रथाओं की शुरुआत की,जिसने आर्थिक नीतियों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला,जिससे जाटों की जीवन शैली और उनकी मूल्य प्रणाली समाप्त हो गई। नरककुण्ड में बास प्रस्तुत उपन्यास के सन्दर्भ में यह उपन्यास धरती धन न अपना का अनुवर्ती माना जाता है। यह उन लोगों की सामाजिक स्थिति को चित्रित करता है जिनके पास भूमि स्वामित्व नहीं है और वे दलित समुदाय से हैं,काली के भाग्य में उसकी अपनी विशेष नियति के अलावा और भी बहुत कुछ शामिल है। यह एक सर्वहारा व्यक्ति के भाग्य का प्रतिनिधित्व करता है जिसे ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में सम्मानजनक अस्तित्व से वंचित कर दिया जाता है,जिससे निरंतर पीड़ा की स्थिति बनी रहती है।[6]दरअसल,उपरोक्त कहानी का नायक काली गांव से बाहर चला जाता है और जालंधर पहुंचता है। वह रोजगार की तलाश में काली शहर में घूमता रहता है,हालाँकि शहर में नौकरी के लिए वहाँ किसी की पहचान होना आवश्क होता है जोकि उसके पास नहीं थी। मिस्त्री ध्यान सिंह ने काली को प्रकट किया, जो इस वास्तविकता से परिचित थे। यह सत्या है कि,लोग दूसरे शहरों से आए लोगों पर आसानी से विश्वास नहीं करते हैं। कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति के पहचान या उनके नाम पर रोजगार प्राप्त कर सकता है। बदलती सामाजिक परिस्थितियों और मानवीय मूल्यों में बदलाव के परिणामस्वरूप,समाज में

IJFANS International Journal of Food And Nutritional Sciences Official Publication of International Association of Food and Nutrition Scientists

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 06, 2022

व्यक्तियों की भूमिका में बदलाव आ रहा है। जमीन अपनी तो थी जिस साहित्य की चर्चा हो रही है वह जगदीशचंद्र की उपन्यास शृंखला का तीसरा खंड है जिसका शीर्षक है'धरती धन न अपना'। काली नामक पात्र,पात्र के शहरी जीवन और परिवार के अनुभवों और गतिशीलता को चित्रित करता है। काली की शादी के बाद,उसका बेटा ज्ञान एक उच्च पद प्राप्त करता है,फिर भी वह अपने दलित परिवार की उपेक्षा करता है। काली अपनी छोटी सी झोपड़ी से निकल जाता है और अपने बेटे के साथ रहने के लिए स्थानांतरित हो जाता है।[7]उस स्थान पर विपरित माहौल देखकर काली को बेचैनी का एहसास होता है। काली को तब गहरा दुःख होता है जब उसका अपना बच्चा ही बात-बात पर उसका अपमान करता है। अपनी आशाओं और इच्छाओं की पूर्ण विफलता देखने के बाद,काली अपने घर वापस लौटना चाहता है।

जगदीश चंद्र ने 'धरती धन न अपना'(1972),'नरककुंड में बास' (1994),एवं 'जमीन अपनी तो थी'(2001)शीर्षकों के अंतर्गत एक ऐसी उपन्यास त्रयी की रचना की है,जिसका आधार भारतीय समाज का सर्वाधिक उत्पीड़ित वर्ग- दलित मजदूर है। लेखक ने इस त्रयी में दलित मजदूरों के अस्तित्व का अत्यंत प्रामाणिक चित्रण किया है। लेखक ने मजदूरों की जीवनशैली,गतिविधियों और पारस्परिक संबंधों के साथ-साथ भुखमरी और अत्याचार के दुखद अनुभवों को साहसपूर्वक दिखाया है। यह कथा दलित मजदूरों द्वारा सहे जाने वाले असहनीय शोषण और पराधीनता पर भी प्रकाश डालती है,जो जमींदार किसानों की एक अंतर्निहित विशेषता बन गई है। घटना पहले ही घट चुकी है इसलिए,लेखक का प्राथमिक उद्देश्य जमींदारों द्वारा दलित श्रमिकों पर किए गए जघन्य कृत्यों और क्रूरताओं को चित्रित करना है। जगदीश चंद्र की उपन्यास-त्रयी भारतीय समाज के एक विशेष वर्ग-दलित मजदूर की दुर्दशा पर केंद्रित है। त्रयी में लेखक ने इस वर्ग की सामाजिक स्थिति और स्थिति को दर्शाया है। उपन्यास-त्रयी दलितों की जातिसूचक शब्द के आसपास घूमती है, जिनमें से

IJFANS International Journal of Food And Nutritional Sciences Official Publication of International Association of Food and Nutrition Scientists

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 06, 2022

अधिकांश जमींदारों की सेवा करने वाले मजदूर हैं।[8]दलित जाति के पुरुष सदस्य जमींदारों के खेतों में कड़ी मेहनत करते हैं,जबकि महिला सदस्य अपने घरों के अंदर घरेलू सफाई का काम करती हैं। काली इस सभ्यता में एक प्रतीकात्मक व्यक्ति हैं जिन्होंने अपने अस्तित्व की शुरुआत से ही कई चुनौतियों और कठिनाइयों का सामना किया है। जगदीश चन्द्र की उपन्यास-त्रयी मजदूर वर्ग के संघर्ष को बड़ी सच्चाई से चित्रित करती है। नायक,काली,एक मजदूर वर्ग है जो गाँव के जमींदारों के अत्याचारों और असहनीय उत्पीड़न का सामना करता है। इन अत्याचारों के कारण वह दो बार गांव छोड़कर शहर भाग जाती है। उनके समुदाय के कई अन्य लोग जमींदारों के उत्पीड़न का शिकार होने के बावजूद गाँव में रहते हैं। चैधरी नंद सिंह चैधरी को गाली देते हैं,उन्हें कुत्ता,मोची कहते हैं और पीटते भी हैं। काली क्रोधित हो जाता है और क्लर्क से पूछता है कि वह वेतन के लिए उसके अनुरोध को अनदेखा करने पर क्यों जोर दे रहा है। गाँव के चैधरी,जमींदार और दलित मजदूरों के बीच संघर्ष को भी दर्शाया गया है। जब श्रमिक दैनिक वेतन की मांग करते हैं तो चैधरी उनका बहिष्कार कर देते हैं, जिससे दोनों वर्ग प्रभावित होते हैं। गाँव का चैकीदार दासू ढिडोरा को पीटता है और चमदारी के लोगों को सूचित करता है कि कोई भी मोची उनके खेतों,फुटपाथों,सड़कों या दुकानों पर नहीं आ सकता है। चैधरी चमारों पर प्रतिबंध लगाते हैं, जबकि चैकीदार चैधरी और दुकानदारों को चेतावनी देता है कि ग्राम पंचायत चमारों को उनकी हवेली,घरों,खेतों या दुकानों में आने की अनुमति नहीं देगी। इससे समुदायों के बीच संबंध टूटने लगते हैं। जगदीश चन्द्र ने अपनी उपन्यास-त्रयी में मजदूरों के जीवन का यथार्थ चित्रण किया है,जिसमें मजदूर जीवन से जुड़े हर पहलू का विस्तार से वर्णन किया गया है।[9]उन्होंने समाज में जो देखा है उसे प्रस्तुत करते हैं और समकालीन समाज में दलित श्रमिक वर्ग द्वारा सामना की जाने वाली यातनाओं और उत्पीड़न को प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार की सामाजिक व्यथा का यथार्थ चित्रण इनके उपन्यासों के माध्यम से स्थापित मानवीय मूल्यों का सूक्ष्म

IJFANS International Journal of Food And Nutritional Sciences Official Publication of International Association of Food and Nutrition Scientists

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 06, 2022

प्रस्तुतीकरण इनके लेखन शैली द्वारा किया जाता है।[10]निम्न व उच्च वर्ग की सामाजिक विषमताएँ जिनमें गरीबी जैसी आर्थिक समस्याओं का मार्मिक चित्रण लेखक अपने शब्दों के माध्यम से प्रयास करता है।

शोध की आवश्यकता

शिक्षा एवं समानता के अभाव के कारण स्वतन्त्रता से पूर्व हमारे देश में निम्न वर्ग के लोगों की स्थिति बड़ी विकट रही है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद देश की स्थिति में जो परिवर्तन हुआ है। उनका प्रभाव समाज के उच्च स्तर व निम्न स्तर के सभी लोगों पर भी पड़ा है। सामाजिक परिस्थितियों में हो रहे परिवर्तनों व शिक्षा के प्रचार से जीवन के सभी क्षेत्रों में सक्रियता आने लगी किन्तु सामाजिक कुप्रथाओं का आँशिक आधार आज भी परिवेश के चारों ओर विस्तारित है। सामाजिक व्यथाओं का प्राचीनकाल के कथाकारों ने अपने उपन्यास विषयों के माध्यम से इसकी चर्चा की है और आगे भी करते आ रहे है। जिसमें साहित्यिक कथाकारों का योगदान काफी सराहनीय भी रहा है। प्रस्तुत अध्ययन जगदीशचन्द्र के उपन्यास में आर्थिक चेतना की सकारात्मकता व नकारात्मकता पर आधारित सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं को सामने लाने का एक प्रयास है।

उद्देश्य

- हिंदी साहित्य के माध्यम से सामाजिक विषमताओं की परिस्थितियों से अवगत करना।
- भारतीय संस्कृति के अनुरुप वर्तमान परिवेश में सामाजिक, आर्थिक परिवर्तन को समझना।
- जगदीशचन्द्र के उपन्यासों में सामाजिक समानता में आर्थिक चेतना का अध्ययन करना।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 06, 2022

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के अन्तर्गत आर्थिक चेतना जीवन के विभिन्न रुपों को जगदीशचंद्र ने अपने सम्पूर्ण कथा साहित्य को दिखाने का प्रयास किया है। जिसका सम्पूर्ण अध्ययन शोध पत्र के माध्यम से किया गया है। हिन्दी क्षेत्र में फैली दलित जन संवेदना को इन उपन्यासों के द्वारा बेहतर ढंग से समझा जा सकता है। जगदीशचंद्र की सामाजिक प्रतिबध्दता में उपर्युक्त परिस्थितियाँ ही प्रेरकतत्व बनी है। उनके उपन्यास मुख्यतः ग्रामीण जीवन की सामाजिक,राजनीतिक,आर्थिक,धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तित परिस्थितियों का समावेश चित्रित करते है। उनके उपन्यासों में चित्रित आर्थिक चेतना का समग्र रुपात्मक अध्ययन प्रस्तुत अध्ययन में समावेशित है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ. कैलाशचन्द्र पाण्डेय,जगदीश चन्द्र संवेदना और शिल्प,जय भारती प्रकाशन इलाहाबाद,संस्करण प्रथम 1992, पृ.131
2. संपा.- डॉ. चमनलालय जगदीश चंद्र- दलित जीवन के उपन्यासकार, आधार प्रकाशन,पंचकूला (हरियाणा),2010, पृ. 13.
3. रैल्फ फॉक्स,उपन्यास और लोकजीवन,पीपुल्स पब्लिशिंग हाऊस,नई दिल्ली,दूसरा संस्करण 1979,पृ. 32
4. डॉ. गणेशन हिन्दी उपन्यास साहित्य का अध्ययन,राजपाल एण्ड सन्ज दिल्ली,संस्करण 1962, पृ.180
5. जगदीश चंद्र, धरती धन न अपनाए राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली,1972, पृ.उपन्यास का पिछला कवर पृष्ठ., पृ. 37
6. जगदीश चंद्र, नरककुंड में बास, राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली,1994, पृ. 312

IJFANS International Journal of Food And Nutritional Sciences Official Publication of International Association of Food and Nutrition Scientists

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 06, 2022

7. जगदीश चंद्र, जमीन अपनी तो थी, राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली,2001, पृ. 13
8. संपा.- डॉ. तरसेम गुजराल, डॉ. विनोद शाहीय जगदीश चंद्र- एक रचनात्मक यात्रा, सतलुज प्रकाशन,पंचकूला (हरियाणा),2007, पृ. 123
9. डॉ. इन्द्रनाथ मदान द्वार सम्पादित हिन्दी उपन्यास पहचान और परख,लिपि प्रकाशन दिल्ली,संस्करण प्रथम 1973, पृ.79
10. सीताराम गुप्ता,उपन्यास का समाजशास्त्र,सीता प्रकाशन हाथरस,संस्करण प्रथम 1995, पृ.16